राष्ट्रीय संगोष्ठी

रामचरित मानस के वैज्ञानिक आयाम एवं सामाजिक समरसता

27—28 मई 2017

प्रति,

.....

.....

.....

प्रेषक :

कुलसचिव

म.प्र. भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय

कोलार रोड, भोपाल (म.प्र.) दूरभाषः 2492093

Website: www.bhojvirtualuniversity.com

E-mail: directorit.mpbou@gmail.com,
drpaveenjainmpbou15@gmail.com

राष्ट्रीय संगोष्ठी

रामचरित मानस के वैज्ञानिक आयाम एवं सामाजिक समरसता

27–28 मई 2017

मानस और रसायन

आयोजक :

कुलसचिव

म.प्र. भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय

कोलार रोड, भोपाल (म.प्र.) दूरभाष : 0755-2492093

Website: www.bhojvirtualuniversity.com

E-mail: directorit.mpbou@gmail.com

drpaveenjainmpbou15@gmail.com

राष्ट्रीय संगोष्ठी

रामचरित मानस के वैज्ञानिक आयाम एवं सामाजिक समरसता

27—28 मई 2017

मानस और रसायन

संगोष्ठी की पृष्ठभूमि

रसायन, रस + आयन दो शब्दों विलायक एवं विलेय से बना रस विलयन अभिक्रियाओं का परिणाम होता है। जो जीवन—लक्षणों से बने संसार निर्माण का आधार भी है एवं अभिक्रियाओं के आपस में संयोजन पुनः विघटन व संयोजन का परिणाम को मानस मे अत्यंत सारगर्भित एवं सरल ढ़ग से बताया है। लिखा है कि "बिनु जल रस कि होई संसारा" अर्थात जल (विलायक) के बिना घोल नही बनता जैसे अजैविक एवं जैविक तत्वों के मिलन के बिना संसार नहीं बनता। वैसे संसार भी विभिन्न रसों का यौगिक मिश्रण है अर्थात् जल ही जीवन में एक मात्र विलायक है और पानी अजैविक अवयवों को अपने सहयोग एवं संयोग से जैविक मूल में परिवर्तित कर देता है तथा इन्हीं के संयोजन से जैविक संसार का निर्माण संभव हो पाता है विविधता भरे संसार का मूल मत्र भी मानस में स्पष्ट दिया है कि एक ही घटक विभिन्न परिस्थियों में समान घटकों से रासायनिक क्रिया कर भिन्न परिणामी पदार्थ बनाते हैं तथा अन्य पदार्थ या घटक भी अभिक्रियाओं के प्रकार व अभिक्रिया की गति को बदलते हैं।

सठ सुधरहिं सतसंगति पाई। पारस परस कुधातु सुहाई।।
धूम कुसंगति कारिख होई। लिखिअ पुरान मंजू मति सोई।।
गृह भेषज जल पवन पट पाई कुजोग सुजोग।
होहिं कुबस्तु सुबस्तु जग लखहिं सुलच्छन लोग।।

जिससे उनके प्रभाव व परिणामों में अंतर आता है व जीवन को प्रभावित करता है। जैसे दूध में खटाई पड़ने से उसका स्वरूप बदल जाता है और दूध में उपस्थित पानी अलग—थलग होकर दूध के गुणों को बदत देता है।

धूमउ तजई सहज करूआई। अगरू प्रसंग सुगंध बसाई।।
जल पय सरिस बिकाई देखहु प्रीति कि रीति भलि।
बिलग होई रस जाई तुरत खटाई परत जिमि।।

अतः समाज की समरसता तथा सामाजिक टूटन को पूर्णतः समझा जा सकता है। मानस में रसायन विज्ञान के अध्ययन से विश्वबंधुत्व एवं सामाजिक प्रगति का मार्ग प्रशस्त होता है।

मानस और भौतिकी

मानव जीवन एवं शरीर में पानी का असीमित महत्व है मानव शरीर के भार का कुल 70 प्रतिशत भाग पानी है इसीलिए मानसकार ने पदार्थ की भौतिक अवस्थाओं और उनमें ऊर्जा की गति को समझाने के लिये पानी को चुना है और पानी की तीन अवस्थाओं गैस, द्रव व ठोस की वाष्प, जल एवं बर्फ तीन रूपों में व्याख्या की हैं जिससे यह स्पष्ट हो सके कि निराकार एवं साकार में कोई अन्तर नहीं है और पदार्थ तीनों अवस्थाओं में रहता है/रह सकता है तथा जड़—चतन, अदृश्य, दृश्य, आकार—निराकार सभी उसी एक पदार्थ के अनेक रूप है।

सोई जल अनल अनिल संघाता। होई जलज जग जीवन दाता।।
जलु हिम उपल बिलग नहिं जैसे।। बाल काण्ड दोहा 115 चौपाई 3

तथा जड़ व चेतन अवस्था को प्रारंम्भिक रूप से समझाने के लिए जल व जल की धारा को प्रस्तुत किया है। जैसे स्थिर जल में स्थितिज ऊर्जा है और बहने पर जल गतिज ऊर्जा को ग्रहण कर लेता है अचर स चल बन जाता है। गतिशील हो जाता है। जड़ से चेतन हो जाता है।

गिर अस्थ जल बीच सम कहियत भिन्न—भिन्न।
बंदउँ सीता सम राम पद जिन्हहि परम प्रिय खिन्न।। बाल काण्ड दोहा 18

इसी प्रकार केवल भौतिक अवस्था ताप को कम ज्यादा करने से पानी वाष्, जल—द्रव व ठोस बर्फ में बदल जाता है तथा अगुण अदृश्य भाप, दृश्य जल एवं आकार के साथा बर्फ के रूप में दिखाई दने लगी है क्योंकि ऊर्जा कम होते ही परमाणुओं के बीच प्रेम/आकर्षण बढ़ जाता है।

अगुन अरूप अलख अज जोई।
भगत प्रेम बस सगुन सो होई।। बालकाण्ड दोहा 115 चौपाई 2

अतः पदार्थों की विभिन्न अवस्थाएँ मिलकर जीव द्रव्य का निर्माण करती हैं जिससे जैविक क्रियायें प्रारंभ हो जाती है अर्थात जीव की उत्पत्ति हो जाती है। मानस में भौतिक विज्ञान के अध्ययन से समाज की जीवन्तता एवं समरसता के सूत्र पूर्णतः समझे जा सकते हैं।

मानस और जीव विज्ञान

जीव की उत्पत्ति को मानस में अत्यंत सरल ढ़ग से भौतिक अवस्थाओं के परिप्रेक्ष्य में होने वाली

रासायनिक क्रियाओं का परिणाम बताया है। जब पाँचों अवयव जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी एवं आकाश अलग–अलग रहते हैं तब जड़ रहते है।

गगन समीर अनल जल धरनी। इन्ह कई नाथ सहज जड़ करनी।।

लेकिन यही पाँचों अवयव जब निश्चित अनुपात में मिलते हैं तो शरीर का निर्माण करते है।

छिति जल पावक गगन समीरा। पंच रचित अति अधम सरीरा।।

जिससे यह स्पष्ट होता है कि यह ब्रम्हकण अविनाशी है जो सभी कणों जड़, चेतन, सभी चर, अचर जीवों में पाया जाता है और इस परिवर्तन की गति एवं दिशा की कहानी अत्यंत सुखद है। इसीलिए समझदार ज्ञानीजन निर्गुण और सगुण में भेद नहीं करते हैं और उन्हें समान मानते हैं।

जड़ चेतन जग जीव जत सकल राममय जानि।
नाम रूप गति अकथ कहानी। समुझत सुखद न परति बखानी।।
अगुन सगुन बि चनाम सुसाखी। उभय प्रबोधक चतुर दुभाषी।।

जैसे आधुनिक विज्ञान में अजैविक कारकों को जैविक क्रियाओं का मूल एवं कारण मानते हैं, लेकिन इन दिनों के अंर्तसंबंध अत्यंत जटिल तथा अतुलनीय है।

अगुन सुगुन दुई ब्रम्हा सरूपा। अकथ अगाध अनादि अनूपा।।
अगुणहि सगुणहि नहिं कछु भेदा। बारि बीच जिमि गावहिं बेदा।।
संत सरल चित जगत हित। बिनु विज्ञान कि समता आवई।।

मानस में जीव उत्पत्ति के साथ–साथ शारीरिक संरचना, वृद्धि चयापचय, पोषण जीवों का वर्गीकरण इत्यादि का विस्तार से वर्णन किया गया है।

अतः मानस में जीव विज्ञान में जीव विज्ञान के अध्ययन से एकात्मभाव विकास एवं सामाजिक उन्नयन के प्रयास में मदद मिलेगी।

मानस और पर्यावरण

जैविक क्रियाओ के आधार पर पर्यावरण को उन्नत बनाने के लिये मानस में अप्रतिम उदाहरण प्रस्तुत है। जिससे सतत् विकास Sustainable Development एवं सामाजिक समरसता प्राप्त की जा सकती है।

भीषण आक्सीकारकों की उपस्थिति मात्र से ही वातावरण जलने लगता है। शंकर का तीसरा नेत्र O_3(ओजोन) O एवं O_2के मिलन से बनता है। पर्यावरण में तापक्रप अनियंत्रित होने से वस्तुएं जलने लगती है। जैसे वायु मण्डल में विभिन्न O_3 की अधिकता से ग्लोबल वार्मिंग हो रही है।

तब सिवँ तीसर नयन उघारा। चितवत कामु भयउ जरि छारा।

मानस में वर्णित शंकर की बारात तो पर्यावरण का अनूठा जागरूकता अभियान है। जहाँ शंकरजी का श्रृंगार पर्यावरण का श्रेष्ठ चित्रण प्रदर्शित करता है, जिसमें सिर में गंगा (शुद्ध जल सर्वोपरि), माथे पर चन्द्रमा, प्यावरण मित्रवत (पृथ्वी की प्राकृतिक विशालतम सोलन प्लेट), नयन तीन (O, O_2, O_3) साँपों का जनेऊ (एम्फीबियन एवं ट्रायफीबियन) की रक्षा आदि को शामिल किया गया है।

ससि ललाट सुन्दर सिंर गंगा। नयन तीनि उपबीत भुजंगा।।

घराती के रूप में पर्यावरण के सभी अजैविक कारकों पर्वतों, नदी, तालाबों की रक्षा एवं उनका आमंत्रण व समन्वय के साथ बारातियों में सभी प्राणीयों का आवाहन कर बायोडायर्वसिटी की रक्षा का संकेत देता है और बताता है कि जैविक जगत पूर्णतः अजैविक जगत पर निर्भर है एवं उसी का एकावार रूप है तथा कुष घास, पानी और पार्वती का हाथ देकर हिमालय ने भगवान शंकर से हरित क्रांति का सन्देश दिलवाया है। पर्यावरण की रक्षा में लगातार कार्य एवंज ल संरक्षण के उपायो के साथ अनियंत्रित प्रदूषण से होने वाली अवर्षा एवं अम्ल वर्षा आदि का वर्णन भी सांकेतिक रूप से दिया गया है।

गहि गिरीस कुस कन्या पानी। भवहिं समरपीं जानि भवानी।।
तब जनमेउ षटबदन कुमारा। तारकु असुरू समर जेहिं मारा।।

इसके परिणाम स्वरूप पौधे में प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया से कार्बन डायऑक्साईड (तारक असुर) को शोषित कर विनष्टीकरण करने के साथ–साथ षठबदन कुमार (ग्लूकोज $C_6H_{12}O_6$) का जन्म होता है, एवं पर्यावरण पुष्ट होता है।

अतः मानस में पर्यावरण विज्ञान में अध्ययन से पर्यावरण संरक्षण एवं सामाजिक उत्थान की प्रेरणा मिलती है।

संगोष्ठी के उद्देश्य

1. युवा शिक्षाविदों, शाधार्थियों, योजनाविदों एवं प्रबंधकों को मानस में वैज्ञानिकता की समाहितता एवं समाज में समरसता के अध्ययन हेतु अवसर उपलब्ध कराना।
2. सामाजिक समरसता के उत्थान हेतु समाज सेवी संस्थाओं एवं शिक्षाविदों को प्रोत्साहित करना।
3. शैक्षिणक संस्थाओं की सहभागिता कर मानस के प्रति शोध भावना एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण स्थापित करना।
4. मानस में रसायन, भौतिकी, जीव विज्ञान एवं पर्यावरण विज्ञान के समाहित विज्ञान को लोकार्पित करना।
5. मानस के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण से धार्मिक एवं सामाजिकता के मध्य अन्तर संबंध स्थापित करना।

MADHYA PRADESH BHOJ (OPEN) UNIVERSITY

Name : .....

Designation : .....

Institute : .....

.....

Miling Address : .....

.....

.....

City : ..... State : .....

Pin : ..... Country : .....

Mobile : .....

E-mail : .....

(Tick whichever is applicable)

Whether : Submitting Paper ☐ Presenting paper ☐

Title of the Paper .....

.....

NO REGISTRATION FEES REQUIRED

संयोजक
प्रो. प्रवीण जैन
निदेशक — मो. 9425007376

आयोजन सचिव
डॉ. ज्योति एस. पाराशर
सहायक निदेशक / सहायक प्राध्यापक (योजना)
मो. : 9425365725